एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

मूंग की प्रमुख बीमारियाँ एवं रोग प्रबंधन

(*पुष्पेन्द्र सिंह शेखावत एवं पवन कुमार)
पादप व्याधि विज्ञान विभाग, कृषि अनुसंधान केन्द्र, श्रीगंगानगर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: shekhawatpushpendar@gmail.com

मूंग राजस्थान में खरीफ ऋतु में उगाई जाने वाली महत्वपूर्ण दलहनी फसल है। मूंग के दानों में 24 प्रतिशत प्रोटीन, 60 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, 13 प्रतिशत वसा तथा अल्प मात्रा में विटामिन सी पाया जाता है। मूंग में फंगस, वायरस जनित कई बीमारियाँ लगती हैं जिनके लक्षण एवं नियंत्रण निम्न हैं:

पीलिया रोग

लक्षण

- पौधों का पीलापान, ऐंठ जाना सिकुड़ जाना।
- पत्तियाँ खुरदरी हो जाती हैं, मोटापन लिए गहरा हरा रंग धारण कर लेती है और सलवट पड़ जाती हैं।
- फसल में शुरू में खेत में कहीं-कहीं स्थानों पर कुछ पौधों में चितकबरे गहरे हरे पीले धब्बे दिखाई देते हैं और एक-दो दिन बाद में संपूर्ण पौधे बिल्कुल पीले हो जाते हैं और पूरे खेत में फैल जाते हैं।
- पीला मोजेक रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है, मक्खी एक रोगग्रस्त पौधे की पत्ती पर बैठती है और वही मक्खी जब दूसरे पौधों पर बैठती है तो पूरे खेत में संक्रमण फैल जाता है।

नियंत्रण

- सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए विभिन्न कीटनाशकों का प्रयोग किया जा सकता है।
- रोग दिखते ही मेटासिस्टाक्स 0.1 या डाईमेथोएट 0.3 प्रतिशत प्रति हेक्टेयर दर से अर्थात् 800 से 1000 लीटर पानी में घोलकर 15 दिन के अंतराल पर दो छिड़काव करें।
- सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए पौध रोपण के 30 दिन बाद इमिडाक्लोप्रिड या एसिटामिप्रिड की 125 मिली. प्रति हेक्टेयर या मिथाईल डिमेटान या एसिफेट की 300 मि.ली. प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- बुवाई के समय ही सही बीजोपचार और उन्नत बीज के चयन से भी इस संक्रमण से बचाया जा सकता है।
- पंत मूंग-1 पीले मोजेक यानि पत्ता मरोड़ बीमारी रोधी किस्म है।

सरकोस्पोरा पती धब्बा रोग

लक्षण

- इस रोग के कारण पौधों के ऊपर गहरे भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं, जिनकी बाहरी सतह भूरे लाल रंग की होती है।
- अनुकूल परिस्थितियों में यह धब्बे बड़े आकार के हो जाते हैं तथा पुष्पीकरण एवं फलियाँ बनने के समय रोग ग्रसित पत्तियाँ गिर जाती है।
- अनुकूल वातावरण में रोग उग्र रूप ले लेता है जिसके कारण बीज भी संक्रमित हो जाते हैं।
- पौधों की पत्तियाँ, जड़े व अन्य भाग भी सूखने लगते हैं।
- सरकोस्पोरा पती धना रोग से संक्रमित पतिया

नियंत्रण

- कार्बेन्डाजिम कवकनाशी (2 मि.ली. / लीटर पानी) अथवा मेन्कोजेब 0.30 प्रतिशत का दो छिड़काव रोगों के लक्षण दिखते ही 15 दिन के अंतराल पर करें।
- बीज को 3 ग्राम केप्टॉन या 2 ग्राम कार्बेडोजिम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बोना चाहिये।
- आर.एम.जी.-268 रोग रोधी किस्म बोएं।